शशि थरूर का इस्तीफ़ा

बड़े बेआबरू हो कर तेरे कूचे से हम निकले

आखिर विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर को अपने पद से इस्तीफ़ा देना ही पड़ गया। ये जनाब आईपीएल की कोच्ची टीम में बेनामी पैसा लगाने के मामले में फंस गये। इनकी महिला मित्र सुनंदा पुष्कर जो दुबई में रहती है और जिससे ये शादी करने वाले हैं, के नाम पर 75 करोड़ रुपये का शेयर दिलवाया। यह सारा मामला उधार का था और इसमें पैसे का लेन-देन नहीं हुआ था। कहा यह गया कि कोच्चि टीम की खरीददारी और उसमें अपनी महिला मित्र को क्रेडिट पर मालिकाने का हिस्सा दिलवाने में मंत्री ने अपने पद के प्रभाव का इस्तेमाल किया है। इसे जो बदनामी हुई, उसे आईपीएल कमिश्नर ललित मोदी पचा नहीं सके और वे खुल कर शशि थरूर के विरोध में आ गये।

इस मामले के मीडिया में उछलने के बाद भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने थरूर से इस्तीफ़ा मांगना शुरू कर दिया। थरूर ने कहा कि उन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया है कि वे इस्तीफ़ा दें। लेकिन थरूर के इस मामले में कांग्रेस सख्त हो गई। काफ़ी प्रयासों के बाद थरूर की सोनिया गांधी से मुलाकात हुई। जानकार बताते हैं कि इस मुलाकात में सोनिया ने थरूर को अच्छी-खासी घुड़की पिलाई और तत्काल इस्तीफ़ा देने को कहा। इसके बाद थरूर ने इस्तीफ़ा प्रधानमंत्री को सौंप दिया। कहते हैं कि थरूर से कुछ प्रभावशाली कांग्रेसी भी नाराज चल रहे थे, क्योंकि थरूर अकड़बाज थे और अपने आगे किसी को कुछ भी नहीं समझते थे। पर सोनिया की झिड़की सुन कर अब शायद उनकी अक्ल ठिकाने आ जाये। थरूर ने मंत्री बनते ही अपनी अकड़बाजी का नमूना दिखाना शुरू कर दिया था। जब तक बंगला अलॉट नहीं होता तब तक कायदे से इन्हें केरल भवन में रहना चाहिए था, पर इन्होंने अपना बसेरा एक फाइव-स्टार होटल को बनाया जहां एक दिन रहने का खर्च एक लाख रुपये पड़ता है। वैसे विदेश मंत्री एसएम कृष्णा भी फाइव-स्टार होटल में रह रहे थे, पर जब सरकार ने इस पर आपत्ति जताई तो उन्होंने फाइव-स्टार होटल खाली कर दिया। पर थरूर ने कहा कि वे कोई सरकार के पैसे से फाइव-स्टार होटल में नहीं रह रहे, बल्कि अपने पैसे खर्च कर रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि केरल भवन में एक तो जिम की सुविधा नहीं है और दूसरे प्राइवेसी भी नहीं है। बावजूद उन्हें फाइव-स्टार होटल छोड़ना ही पड़ा। इसके बाद जब सरकार ने यह निर्णय लिया कि बचत करने के लिए अब मंत्री और सरकारी अफ़सर आदि हवाई जहाजों में इकॉनामी क्लास में यात्रा करेंगे तो थरूर ने इकानॉमी क्लास को कैटल क्लास यानी जानवरों का क्लास घोषित कर दिया। इससे पता चलता है कि शशि थरूर कितना बड़ा अभिजात है। हवाई जहाजों में चाहे किसी भी क्लास में पैसे वाले लोग़ सफ़र करते हैं, आम आदमी नहीं। आम आदमी तो बसों-ट्रेनों से सफ़र करते हैं। जब शशि थरूर ने हवाई जहाज में इकॉनमी क्लास में यात्रा करने वालों को भेड़-बकरियां घोषित कर दिया तो समझा जा सकता है कि आम लोग़ों के बारे में उसकी क्या धारणा होगी। शशि थरूर और इन जैसे लोग़ पूरी तरह आम जनता से कटे होते हैं और उनमें जनता के प्रति सहानुभूति का भाव भी नहीं होता। अब जिसमें जनता के प्रति सहानुभूति नहीं होगी, वह क्या खाक उनके विकास के बारे में सोचेगा। जो व्यक्ति प्रतिदिन अपने रहने पर ही एक लाख खर्च कर रहा है, उसमें और आम जनता जिसका अधिकांश 22 रुपये रोजाना पर जी रहा है, के बीच बहुत गहरी खाई है। लेकिन यह खाई तो सभी नेताओं और जनता के बीच है जिसे वे प्रकट करना नहीं चाहते। पर थरूर तो कोई नेता नहीं है। इसे जबरन नेता बनाया गया और चूंकि यह काफ़ी समय से संयुक्त राष्ट्र संघ में डिप्लोमैट लगा हुआ था, इसलिए इसे विदेश राज्य मंत्री का पद दे दिया गया। इस बार संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पद के लिए होने वाले चुनाव में इसने भी अपनी दावेदारी जताई थी और चुनाव लड़ा था, पर यह हार गया और बान की मून महासचिव चुने गये। अब पता लग गया कि जिस व्यक्ति से राज्य मंत्री का पद संभाला नहीं गया, वह भला संयुक्त राष्ट्र के महासचिव का पद कैसे संभाल पाता? खास बात यह भी है कि यह अपने आप को लेखक बताता है और अख़बारों में कॉलम लिखता है, लेकिन आम जनता के प्रति इसके मन में इतनी घृणा है कि पूछें मत। ऐसे व्यक्ति को मंत्री पद से हटा कर ठीक किया गया है, पर एक थरूर के हटाने से क्या होने वाला है जहां थरूर ही थरूर भरे पड़े हैं।

- मनोज

ईएसआई अस्पताल में सहकर्मियों द्वारा डॉक्टर का उत्पीड़न

फरीदाबाद (म.मो.) सेक्टर-8 स्थित ईएसआई अस्पताल में एक डॉक्टर को अपने ही सहकर्मियों द्वारा इसलिए उत्पीड़ित किया जा रहा है, क्योंकि डॉक्टर साहब अपने पेशे के प्रति अतिशय ईमानदार हैं। डॉ.बलराम चौधरी बतौर चिकित्सा अधिकारी सेक्टर-8, ईएसआई में नियुक्त हैं। वे 22 वर्षों की सेवा अब तक पूरी कर चुके हैं, इसके बावजूद उनकी कोई पदोन्नति नहीं हुई है। डॉ.बलराम चौधरी इंदिरा गांधी की हत्या के बाद खालिस्तानी उग्रवादियों द्वारा किये गये एक ट्रांजिस्टर बम विस्फोट की चपेट में आने के बाद दायें हाथ और बायें पैर से 100 प्रतिशत विक्लांग हो गये। इसके बावजूद उनकी कर्त्तव्यपरायणता व समर्पण पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

लेकिन डॉ. चौधरी की यह कर्त्तव्यपरायणता आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे सहकर्मियों को रास नहीं आई। उन्होंने डॉ.साहब के खिलाफ़ षड्यंत्र एवं कुचक्र रचना शुरू कर दिया। ईएसआई में आये कई मरीज़ बताते हैं कि जहां अन्य डॉक्टर केवल नाममात्र की दवाई ही अस्पताल से देते हैं, बाकी बाहर बाज़ार से लेने को कहते हैं, वहीं डॉ. चौधरी सभी आवश्यक दवाइयां मरीज़ों को अस्पताल से ही दिलवा देते हैं।

गौरतलब है कि ईएसआई अस्पताल में डॉक्टर व कंपाउंडर गठजोड़ कर अधिकांश दवायें ब्लैक में बेच देते हैं। बाहर से दवा लिखने पर डॉक्टरों को दवा कंपनियों की ओर से मोटा कमीशन भी मिलता है। ये डॉक्टर अपने कार्यदिवस के अधिकांश समय में गायब रहते हैं। अपने केबिन में वे एकाध घंटा ही बैठते हैं। इसके विपरीत डॉ. चौधरी पूरे समय अपने केबिन में बैठ कर तसल्ली से मरीज़ों को देखते हैं। अस्पताल से छुट्टी के बाद अस्पताल परिसर में एक पेड़ के नीचे कुर्सी डाल कर देर तक मरीज़ों को देखते हैं।

गैरकानूनी रूप से अपने घर में मोटी फ़ीस लेकर मरीज़ों को देखने वाले डॉक्टरों को डॉ. चौधरी का यह सेवा भाव अखरता है। इसलिए ये फर्जी आरोप लगा कर डॉ. चौधरी को परेशान करने में लगे रहते हैं। ऊपर के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों का साथ मिलने से ये अपने मकसद में कामयाब भी हो जाते हैं। अपने साथ उत्पीड़न के जिम्मेदार सहकर्मियों की शिकायत डॉ. चौधरी ने कई बार उच्च पदस्थ अधिकारियों से भी की, पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उनके समर्थन में कई मरीज़ों ने भी शासन को ज्ञापन सौंपे, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

डॉ. चौधरी के साथ उत्पीड़न की चर्चा कई मरीज़ करते हैं। मरीज़ों के मुताबिक अस्पताल के भ्रष्ट डॉक्टर एवं स्टाफ डॉ. चौधरी से निजात पा कर अपनी लूट को निष्कंटक जारी रखना चाहते हैं। इसलिए डॉ. चौधरी को विक्लांगता के चलते दो साल की सेवा बढ़ोत्तरी से भी वंचित करने की कोशिश की जा रही है। इस संबंध में कई मरीज़ों एवं श्रमिकों ने ईएसआई प्रबंधन को डॉ. चौधरी के सेवा विस्तार के लिए ज्ञापन भी सौंपा है। कुल मिला कर ईएसआई अस्पताल जो श्रमिकों के पैसे से ही चलता है, उनमें श्रमिकों को ईमानदारीपूर्वक चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के बजाय, ये किस तरह डॉक्टरों द्वारा की जाने वाली लूट का अड्डा बन गये हैं, इसे उपरोक्त प्रकरण से समझा जा सकता है।

भगवती जागरण :

भक्ति के नाम पर धूम-धड़ाका और पाखंड

शहर में पूरे साल देवी-जागरण और चौकियों की धूम मची रहती है। इनके प्रचार के लिए अनेकों स्थान पर बड़े-बड़े पोस्टर/होर्डिंग लगाये जाते हैं और उनमें बताया जाता है कि कौन से प्रसिद्ध गायक अपनी मंडली के साथ माता का जागरण करेंगे। अक्सर मुहल्लों के बीच सड़क घेर कर मंच बना लिया जाता है जिस पर देवी की प्रतिमायें सजा दी जाती हैं और सामने भक्त-भक्तिनियों के बैठने के लिए व्यवस्था कर दी जाती है। वहीं मंच के पास गाने-बजाने वाले आसन ग्रहण करते हैं। जगराते यानी माता का जागरण के बाद भंडारे की व्यवस्था होती हैं और वहीं सड़क घेर कर हलवाई खाने-पीने का सामान बनाते रहते हैं। ऐसे में किसी को उधर से निकलना हुआ तो कतई नहीं निकल सकता है, उसे दूसरी तरफ़ से घूम कर जाना पड़ेगा।

यह सारी तैयारियां तो अहले सुबह से चलती रहती हैं, पर शाम होते ही वातावरण पूरी तरह से बदल जाता है। लाइटें जगमगाने लगती हैं। शामयाने के नीचे लोग़ों की भीड़ बैठ जाती है। बच्चे, बूढ़े, जवान, मर्द-औरतें। गाने-बजाने वाले भी मुस्तैद हो जाते हैं, फ़िर 'जय माता दी' और 'सच्चे दरबार की जय' के साथ भजन पेश किये जाने लगते हैं। ये भजन इतने कानफाड़ू आवाज़ में गाये जाते हैं और इतना ज़्यादा शोर-शराबा मचाया जाता कि पूछें मत। आवाज़ की तीव्रता इतनी ज़्यादा होती है कि कमज़ोर दिल का आदमी बर्दाश्त न कर सके। फ़िर छोटे बच्चों और बूढ़ों को इतनी तेज़ आवाज़ से काफ़ी परेशानी होती है। वे सो नहीं पाते। पर करें तो क्या करें? यहां तो मामला धर्म का है और धर्म का बेहद 'संवेदनशील' कहा जाता है। इस मामले में हाथ डालने को बर्र के छत्ते में हाथ डालने के बराबर कहा गया है।

लेकिन कानून के हिसाब से देखें तो कहीं भी सड़क घेर कर कानफाड़ू शोर-शराबा शुरू कर दिया जाना गलत है। इस तरह के कार्यक्रम के लिए पहले प्रशासन से इजाजत लेनी पड़ती है और इजाजत मजिस्ट्रेट की श्रेणी का अधिकारी ही दे सकता है। वहां भी इतनी तेज़ आवाज़ में गीत-संगीत बजाने की इजाजत नहीं मिल सकती और किसी भी हाल में रात के दस बजे के बाद ऐसे कार्यक्रम नहीं हो सकते। पर इन कानूनों की परवाह ही कौन करता है? जिन्हें कानून लागू करना है अथवा सुनवाई करनी है, वे भी इसे 'धर्म' का मामला कह कुछ भी कहने-सुनने से इनकार कर देते हैं। कानून सिर्फ़ काग़ज़ों का पेट भरने के लिए है।

भगवती जागरण की जो संस्कृति तेज़ी से फैलती जा रही है, वह एक तरह से धार्मिक भावना को बढ़ावा नहीं देती, बल्कि दिखावे और मनोरंजन को बढ़ावा देती है। यह पैसे वाले लोग़ों में एक तरह की होड़ भी पैदा करती है कि अगर उसने भगवती जागरण कराया तो मैं क्यों न कराऊं? मैं तो और बड़े पैमाने पर करवाऊंगा। इसके अलावा निठल्ले बेरोज़गार युवाओं को भी यह कराना बड़ा आकर्षक लगता है। इसमें उनका समय अच्छा बीतता है। वे भगवती जागरण कराने के लिए चंदा उगाही शुरू कर देते हैं और खुद के छपे चित्रों वाली पोस्टरबाजी भी करते हैं। इस तरह एक ही इलाके में काफ़ी संख्या में भगवती जागरण होने लगते हैं, पूरे शहर को लें तो रोज ही कई-कई जागरण होते पाये जायेंगे।

एक खास बात यह है कि इन जागरणों में अश्लीलता का भी प्रवेश हो जाता है। गाने-बजाने वाले जो बुलाये जाते हैं, वे पूरे व्यावसायिक होते हैं। आज अगर वे भगवती जागरण में गा रहे हैं तो कल किसी दूसरे आयोजन में भी गाते-बजाते मिल जायेंगे। उनका उद्देश्य माता की भक्ति नहीं, बल्कि पैसा कमाना है। वैसे कुछ गायक एवं गायिकायें भगवती जागरण की ही स्पेशलिस्ट हो गई हैं। इनकी फ़ीस बहुत ऊंची होती है।

कई तो ऐसे हैं कि एक रात के पचास हज़ार रुपये से भी अधिक ले लेते हैं। ये माई का गुणगान साधारण भजनों से नहीं करते, बल्कि उस समय चल रही हिट फ़िल्मी गीतों की धुनों पर भजन बना लेते हैं और उन्हें ही पूरे धूम-धड़ाके के साथ गाते हैं। और गाने के साथ-साथ नाचते भी हैं। उन्हें नाचता देख भक्त गण भी नाचने लगते हैं। फ़िल्मी अश्लील व उत्तेजक धुनों पर भक्तों का डांस बेहद जुगुप्साकारी लगता है। समझ में नहीं आता कि आखिर यहां किस तरह की भक्ति का प्रदर्शन किया जा रहा है। क्या हमारे देश में भक्ति-गीतों का अभाव है? एक से एक भक्त कवियों के लिखे गीत हैं, नानक, कबीर, तुलसी, रैदास, कुंभनदास, मीराबाई और भी न जाने कितने ही नाम हैं जिनके भक्ति-गीत हृदय में श्रद्धा भाव जगाने वाले हैं, पर भगवती जागरण वाले जिस तरह से गीत-संगीत पेश करते हैं, वो तो कामुकता और उत्तेजना को भड़काने वाले होते हैं, क्योंकि वे फ़िल्मी अश्लील गीतों की पैरोडी होते हैं।

सवाल है, क्या इसे भक्ति कहेंगे? देवी को फ़िल्मी धुनों पर बने गीतों-पैरोडियों को सुनाना और ऐसे ध्वनि-विस्तारक यंत्रों को लगाना कि आस-पास की शांति ही भंग हो जाये, आख़िर कहां की भक्ति है। क्या भाड़े पर गाने-नाचने वालों को बुला कर सच्ची भक्ति संभव है? हर्गिज नहीं। भक्ति तो व्यक्ति के अंदर उठने वाला भाव है जिसके लिए किसी प्रकार का नाचना-गाना कर उसे दिखाने की जरूरत नहीं होती। भक्ति भावना के प्रदर्शन के लिए जागरण करना और शामयाना वगैरह लगा कर बिजली आदि की सजावट कर धूम-धड़ाका करना एक तरह का दिखावा और पाखंड है। देवी ऐसे भक्तों के पास नहीं आतीं। उनकी कृपा-दृष्टि तो उस पर होती है जो मन ही मन उनका सच्चे भाव से स्मरण करे और दुनिया में ग़लत काम करने से बचे।

-ग़रीबदास